देश विदेश की लोक कथाऐं — एक कहानी कई रंग–**15** ः

मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Magar Aur Bandr jaisi Kahanaiyan (Crocodile and Monkey Like Tales)
Cover Page picture : Monkey on the Crocodile
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ 5
1 बेवकूफ मगर 7
2 मगर और बन्दर 14
3 बन्दर और मगर 18
4 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी 22

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"[1]। अब तक इस सीरीज़ में चौदह पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

अब प्रस्तुत है इस सीरीज की पन्द्रहवीं पुस्तक — "मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ"[2]। तुम लोगों ने मगर और बन्दर की कहानी तो सुनी ही होगी जिसमें मगर अपनी पत्नी के कहने पर बन्दर का कलेजा खाने के लिये बन्दर को घर लाने के लिये जाता है। ऐसी कहानी केवल भारत में ही नहीं सुनी जाती और देशों में भी सुनी जाती हैं। तो आओ पढ़ते हैं वैसी ही कहानियॉ और...

ये सब कहानियॉ **5–6** साल तक के बच्चों के लिये बहुत अच्छी हैं ऐसी कहानियॉ कई देशों में कही सुनी जाती हैं और वे सब एक जैसी ही लगती हैं। तो लो पढ़ो ये कहानियॉ इस सीरीज़ की पन्द्रहवीं कड़ी।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – Cat and Rat Like Stories

[2] "One Story Many Colors-15" – Crocodile and Monkey Like Stories

1 बेवकूफ मगर[3]

बेवकूफ मगर की यह लोक कथा भारत के गुजरात प्रदेश में रहने वालों में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात ही कि गुजरात की एक नदी के किनारे एक जामुन का पेड़ था जिस पर एक बन्दर रहता था। वह बहुत ही खुशमिजाज और दयालु बन्दर था जिसको जामुन खाने बहुत अच्छे लगते थे और जो उस पेड़ पर बहुतायत से होते भी थे।

एक दिन एक भूखा मगर बन्दर के पास आया और बोला — "क्या मैं भी तुम्हारे इस पेड़ के मीठे मीठे फल खा सकता हूँ?"

बन्दर बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।" और तुरन्त ही कुछ जामुन तोड़ कर उसने भूखे मगर की तरफ फेंक दीं।

मगर ने जब वे जामुन खायीं तो उसको वे बहुत अच्छी लगीं। इसलिये वह अगले दिन उनको खाने के लिये फिर से बन्दर के पास लौटा और उससे फिर से वे जामुन

[3] The Foolish Crocodile – a folktale from Gujarat, India – Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/359/preview

खाने के लिये मॉगे। बन्दर ने फिर से उसे वे फल खाने के लिये फेंक दिये।

अब क्या था मगर रोज उन फलों को खाने के लिये बन्दर के पास आने लगा।

एक दिन मगर ने बन्दर से पूछा — "बन्दर भाई तुम्हारे ये फल तो बहुत अच्छे हैं क्या इनमें से कुछ फल मैं अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी ले जा सकता हूँ?"

अब तक क्योंकि बन्दर और मगर अच्छे दोस्त हो गये थे तो बन्दर ने मगर को अपने घर अपनी पत्नी के लिये भी कुछ फल ले जाने के लिये दे दिये। मगर ने बन्दर से वे मीठे फल ले कर उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वे फल ले कर अपने घर चला गया।

पर उसकी पत्नी कोई बहुत अच्छी मगर नहीं थी। वह एक जादूगरनी[4] मगर थी। वह हमेशा ही जंगल के दूसरे जानवरों के लिये कुछ न कुछ जाल फेंकने का ताना बाना बुनती रहती थी।

मगर की पत्नी ने अपने पति से पूछा कि उसको इतने मीठे फल कहॉ से मिले।

मगर ने उसको बताया — "मेरा एक बहुत ही प्यारा दोस्त है, एक बन्दर। वह इस नदी के दूसरी ओर एक जामुन के पेड़ पर रहता है वह मुझे यह फल रोज खिलाता है।"

[4] Translated for the word "Witch"

अब मगर की पत्नी तो एक जादूगरनी थी और वह भी बहुत बुरी और नीच जादूगरनी। उसने एक पल को तो सोचा फिर वह बोली — "अगर बन्दर जामुन के पेड़ पर रहता है और ऐसे मीठे मीठे फल सारा दिन खाता है तो ज़रा सोचो कि उसका कलेजा कितना मीठा होगा। मुझे खाने के लिये इस बन्दर का कलेजा चाहिये और वह मुझे तुम ला कर दोगे।"

पति मगर बोला — "मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैंने तुम्हें अभी बताया कि यह बन्दर मेरा दोस्त है और मैं तुम्हें उसका कलेजा खाने नहीं दे सकता।"

चालाक मगर पत्नी ने फिर कुछ पल सोचा और फिर बोली — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं होता कि ये फल तुम किसी बन्दर से ले कर आये हो। मुझे तो लगता है कि तुम मेरे पीछे किसी और सुन्दर मादा मगर के चक्कर में पड़ गये हो। तुम मुझे धोखा दे रहे हो मुझे मालूम है।"

पति मगर ने उसको बहुत समझाया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया है और अपनी पत्नी के इलजाम लगाने पर बहुत दुखी हो गया।

उसने सोचा कि अब उसकी भलाई इसी में है कि वह बन्दर और जामुन के पेड़ से अब दूर ही रहे जब तक उसकी पत्नी ठीक हो जाये और वह अपने इस नीच प्लान को भूल जाये।

धीरे धीरे हफ्तों गुजर गये और मगर पत्नी ने अपने पति पर इलजाम लगाना नहीं छोड़ा कि वह किसी दूसरी मादा मगर से मिलता था हालॉकि वह जानती थी वह उस पर झूठा इलजाम लगा रही है।

वह कहती — "मै जानती हूॅ कि अगर वह कोई बन्दर होता जो जामुन के पेड़ पर रहता तो तुम मुझे जरूर ही उसे पकड़ कर ला देते और मुझे उसका कलेजा खिला देते। अगर तुम मुझे प्यार करते होते तो।"

आखिर पत्नी मगर ने पति मगर को इस बात के लिये राजी कर ही लिया कि वह बन्दर के पास जाये और उसको पत्नी मगर के पास ले कर आये ताकि वह उसका कलेजा खा सके।

सो अगली शाम मगर जामुन के पेड़ के पास पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसको बहुत ही खराब लग रहा था। मगर को नीचे आया देख कर बन्दर ने पूछा — "अरे मगर भाई तुम इतने हफ्तों से कहॉ थे। मुझे तो इतने दिनों तक तुम्हारी बहुत याद आती रही।"

जैसा मगर कै पत्नी ने उसको सिखाया था मगर ने उसको वही जवाब दिया — "असल में मेरी पत्नी तुमको खाने पर बुलाना चाह रही थी ताकि वह तुम्हारे दिये जामुन के फलों का धन्यवाद कर सके पर हम लोग नदी के दूसरी तरफ रहते हैं।

मैं अपनी पत्नी से यही बहस करता रहा कि तुम तो पानी में तैर नहीं सकते अगर तुम्हें नदी पार करनी पड़ी तो तुम तो डूब जाओगे

और मैं यकीनन यह नहीं चाहता कि तुम पानी में डूबो। तो तुमको मैं अपने घर कैसे ले जाऊॅ।"

बन्दर बोला — "पर तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर नदी पार करा सकते हो। इस तरह से मैं तुम्हारे घर भी आ जाऊॅगा और तुम्हारी पत्नी से भी मिल लूॅगा।"

मगर इस बात पर राजी तो हो गया पर वह यह सोच सोच कर बहुत दुखी था कि वह अपने दोस्त से धोखा कर रहा था।

उधर बन्दर को इस बात का कुछ पता ही नहीं था कि उसका क्या होने वाला है वह खुशी खुशी पेड़ से कूदा और मगर की पीठ पर जा कर बैठ गया। मगर पानी में खिसक गया और मगर नदी पार अपने घर की तरफ चल दिया।

जब मगर पानी में तैर रहा था तो उसको इतना खराब लगा कि उसने सोचा कि वह अपने दोस्त को इतना बड़ा धोखा नहीं दे सकता वह उसको सच बता ही देता है।

सो वह बोला — "बन्दर भाई मैंने तुमसे जो कुछ भी कहा था वह सच नहीं बोला था। मेरी पत्नी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है और मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि वह तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है। तुमको उसने खाना खिलाने के लिये नहीं बल्कि तुम्हारा कलेजा खाने के लिये बुलाया है।"

यह सुन कर बन्दर पहले तो डर गया पर वह एक होशियार बन्दर था सो उसका दिमाग तेज़ी से चलने लगा। कुछ पल तो उसने

सोच पर फिर बोला — "पर मगर भाई यह बात तुम्हें मुझे पहले बतानी थी क्योंकि मैं तो अपना कलेजा जामुन के पेड़ पर ही छोड़ आया हूॅ।

अगर तुम्हारी पत्नी को मेरा कलेजा ही खाना है तो हमको उसे लाने के लिये उस पेड़ पर वापस जाना पड़ेगा।"

यह सुन कर तो मगर को बहुत आश्चर्य हुआ कि बन्दर अपना कलेजा उसकी पत्नी को इतनी जल्दी देने के लिये तैयार हो गया था। पर जब बन्दर के पास उसका कलेजा था ही नहीं और वह पेड़ पर रखा था तो वह क्या करता वह तुरन्त ही पेड़ की तरफ लौट पड़ा।

जैसे ही वे जामुन के पेड़ के पास पहुॅचे बन्दर जितनी तेज़ी से हो सकता था उतनी जल्दी से मगर की पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और उसकी सबसे ऊॅची शाख पर जा कर बैठ गया।

जब उसे यकीन हो गया कि वह अब अपने दोस्त से सुरक्षित था तब उसने मगर की तरफ देखा और बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ मगर हो। अरे मेरा कलेजा तो मेरी छाती में धड़क रहा है और यह तो वहॉ हमेशा से ही धड़कता रहा है।

तुम्हारी बुरी नीच पत्नी को तो अब वह कभी खाने को नहीं मिलेगा। और अब हम तुम भी कभी नहीं मिलेंगे क्योंकि तुमने मुझे धोखा दिया है। बस अब तुम यहॉ से चले जाओ।"

यह सुन कर मगर अपने घर वापस चल दिया। जब तक वह अपने घर पहुँचा तब तक मगर को अपने किये पर सोचने के लिये काफी समय मिल गया। उसको अपने दोस्त को धोखा देने का बहुत दुख था। उसको अपने किये का अफसोस भी बहुत था।

जैसे ही वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि बन्दर कहॉ है। मगर बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि बन्दर ने मुझे धोखा दे दिया और अब वह अपने पेड़ से नीचे कभी नहीं आयेगा।"

पर मगर की पत्नी अपने पति की कहानी से सन्तुष्ट नहीं थी उसने अपने पति को अपने घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि जब तक वह ज़िन्दा है वह उस घर में कदम भी न रखे।

मगर ने अपनी पत्नी की तरफ से मुँह फेरा और अपनी उन सब चीज़ों को भूल कर जिन्हें वह कभी जानता था नदी के नीचे की तरफ तैरना शुरू कर दिया।

वह बहुत दुखी था और अकेला था। उसको यही पता नहीं था कि वह कहॉ जा रहा था पर उसको इतना जरूर पता था कि उसने उसी पल अपनी किस्मत को ताला लगा दिया था जब उसने अपने दोस्त को धोखा दिया था।

वह उस अँधेरी उदास रात में तैरते हुए सोचता जा रहा था "मैं इसी का अधिकारी हूँ मुझे यही मिलना चाहिये था।

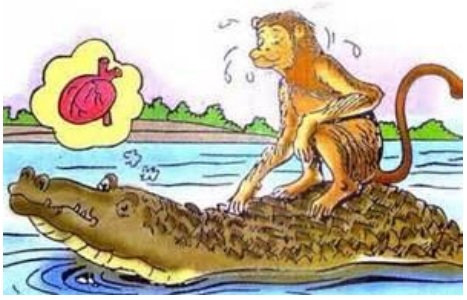

2 मगर और बन्दर[5]

मगर और बन्दर की इस कहानी को अफ्रीका के इथियोपिया देश में इस तरह कहते हैं।

एक बार अवाश नदी[6] के किनारे एक छोटा मगर और एक छोटा बन्दर रहा करते थे। बन्दर तो सचमुच ही बहुत छोटा था परन्तु मगर अपनी उमर में छोटा होते हुए भी अपने आकार में बहुत बड़ा था।

ये दोनों आपस में बड़े गहरे दोस्त थे। बन्दर तो नदी के किनारे वाले बड़े पेड़ पर रहता था और मगर नदी में रहता था। कभी कभी धूप खाने के लिये वह नदी के किनारे पर आ जाया करता था।

ये लोग आपस में बहुत कुछ करते रहते थे। कभी अगर मगर खेलना चाहता तो वह बन्दर को किनारे पर से ही आवाज लगाता — "आओ बन्दर भाई, पानी में खेलेंगें।" और दोनों पानी में बहुत देर तक खेलते रहते।

और कभी अगर बन्दर का सवारी करने का मन करता तो मगर उसको अपनी पीठ पर बिठा कर पानी में दूर दूर की सैर करा लाता। बन्दर अक्सर अपने पेड़ से तोड़ कर मगर को मीठे मीठे फल खिलाया करता।

---

[5] A Crocodile and a Monkey – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Africa

[6] Awash River is a very important and known river of Ethiopia.

एक दिन राजा मगर बीमार पड़ा तो डाक्टर मगर उसको देखने आया। उसने देख कर राजा मगर से कहा कि उसकी बीमारी की दवा केवल बन्दर का कलेजा है। अगर बन्दर का कलेजा कहीं से मिल जाये तो वह बहुत जल्दी ठीक हो सकता था।

राजा मगर जानता था कि एक बन्दर उसके राज्य के एक मगर का बहुत अच्छा दोस्त था सो उसने उस मगर को बुलवाया।

उसने मगर से कहा — "मुझे एक बन्दर के कलेजे की जरूरत है। हमारे राज्य में तुम ही एक ऐसे मगर हो जो मुझे बन्दर का कलेजा ला कर दे सकते हो।"

मगर समझ गया कि राजा मगर उसके दोस्त बन्दर के बारे में बात कर रहा था। वह राजा की आज्ञा को टाल तो नहीं सकता था पर वह मन ही मन अपने दोस्त के लिये बहुत दुखी था।

वह अपने दोस्त को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुॅचाना चाहता था पर वह राजा की आज्ञा मानने के लिये भी मजबूर था। सो वह दुखी मन से बन्दर से मिलने चल दिया।

किनारे पर जा कर उसने आवाज लगायी — "आओ बन्दर भाई मेरी पीठ पर बैठ जाओ आज मैं तुमको नदी के सबसे ज़्यादा गहरे हिस्से की सैर करा कर लाता हूॅ।"

बन्दर खुशी खुशी पेड़ से कूदा और मगर की पीठ पर बैठ गया। यह बन्दर के लिये कोई नयी बात नहीं थी क्योंकि वह अक्सर ही मगर की पीठ पर बैठ कर नदी की सैर के लिये जाता था

इसलिये बन्दर को कोई शक ही नहीं हुआ कि मगर उसका कलेजा चाहता था इसलिये वह उसको आज सैर कराने ले जा रहा था।

तैरते तैरते मगर बन्दर को नदी के बीच में ले गया। वहॉ जा कर मगर ने बन्दर से कहा — "बन्दर भाई मुझे माफ कर दो मुझे बहुत दुख है पर मैं मजबूर हूॅ। हमारे राजा मगर को एक बन्दर के कलेजे की जरूरत है।

वह बहुत बीमार है और वह केवल बन्दर के कलेजे से ही ठीक हो सकता है इसलिए मुझे तुम्हारे कलेजे की जरूरत है।"

बन्दर को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह डर भी गया कि अब वह मगर से अपनी जान कैसे बचाये। उसके दिमाग ने तेज़ी से काम करना शुरू कर दिया।

कुछ पल बाद वह मगर से बोला — "मेरे दोस्त, तुमने मुझे पहले नहीं बताया वरना मैं अपना कलेजा अपने साथ ले कर आता। तुमको शायद हम लोगों के बारे में पता नहीं है।

बन्दर लोग अपना कलेजा अपने साथ ले कर नहीं घूमते हैं। वे जब बाहर जाते हैं तो अपना कलेजा अपने घर पर ही रख कर जाते हैं। खैर कोई बात नहीं। तुम मेरे घर वापस चलो मैं वहॉ पहुॅच कर तुमको अपना कलेजा तुरन्त ही दे दूॅगा।"

मगर को बन्दर पर पूरा भरोसा था सो वह बन्दर को ले कर वापस किनारे पर आया। किनारे पर आते ही बन्दर मगर की पीठ से कूद कर पेड़ पर चढ़ गया और चिल्ला कर बोला — "मगर भाई,

तुमने मेरे साथ चालाकी खेली और मैंने तुम्हारे साथ चालाकी खेली, हिसाब बराबर। अब नमस्कार।"

मगर भी तुरन्त ही तैर कर दूर चला गया। वह बन्दर की होशियारी पर बहुत खुश था क्योंकि इस तरह वह अपने दोस्त को मारने के पाप से बच गया था।

इसके बाद दोनों को कभी किसी ने एक साथ नहीं देखा पर मगर को किनारे पर आ कर अक्सर बन्दर को बहुत देर तक देखते पाया गया।

यह कहानी भारत की पंचतन्त्र की कहानियों में पायी जाती है। यह तो पता नहीं कौन सी कहानी पहले लिखी गयी और कौन सी बाद में। इसका दूसरा रूप आगे दिया हुआ है "बन्दर और मगर"।

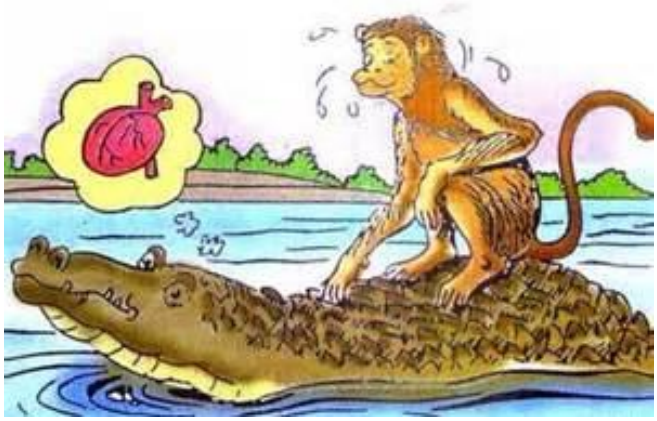

3 बन्दर और मगर[7]

मगर की पत्नी चिल्लायी — "देखो, मुझे एक बन्दर दिखायी दे रहा है। मुझे उसका कलेजा खाना है। मुझे जब तक अच्छा नहीं लगेगा जब तक तुम मुझे एक बन्दर ला कर नहीं दोगे।"

मगर अपनी पत्नी को खुश देखना चाहता था सो वह नदी में तैर गया और एक बन्दर को देखा जो नदी के किनारे बैठा था।

उसने बन्दर से कहा — "मैं एक ऐसे टापू को जानता हूँ जहॉ बहुत मीठे मीठे आम होते हैं।"

बन्दर ने मगर की मीठी मीठी आवाज सुनी तो वह बोला — "मुझे तो आम बहुत अच्छे लगते हैं। कहॉ हैं वे? मुझे उनको देखना है। क्या वे पके हुए हैं?

मैं उनको छूना चाहता हूँ। क्या वे सख्त हैं या मुलायम? क्या उनकी खुशबू बहुत अच्छी है? क्या वे मीठे हैं या खट्टे? मुझे दिखाओ कि वे कहॉ हैं।"

---

[7] The Monkey and the Crocodile – a story from Panchtantra, from India, Asia.
Adapted from the Web Site :
http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=148
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[My Note: This story is very common in the whole India and is heard and told in several flavors in other countries too. This flavor is quite different from the one which is very popular there.]

मगर मुस्कुराया और बोला — "आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उस टापू पर लिये चलता हूँ।" बन्दर मगर की पीठ पर बैठ गया और मगर पानी में तैर गया।

अचानक मगर पानी के अन्दर जाने लगा। जब बन्दर के शरीर को पानी ने छुआ तो वह घबरा कर बोला — "यह तुम क्या कर रहे हो?"

मगर बोला — "मेरी पत्नी तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है इसलिये मैं तुमको उसके पास ले जा रहा हूँ।"

बन्दर बोला — "ज़रा रुको। तुमको तो मुझसे यह बात पहले ही कह देनी चाहिये थी कि तुमको मेरा कलेजा चाहिये। उसको तो मैं पेड़ पर अपने घर में ही छोड़ आया हूँ। अगर तुम मुझे मेरे घर वापस ले चलो तो मैं उसको तुम्हारे लिये ले आता हूँ।"

मगर इतना होशियार नहीं था कि वह बन्दर की बात समझ सकता सो वह किनारे की तरफ लौट पड़ा। वहाँ पहुँच कर वह बोला — "तुम जल्दी अपना कलेजा ले कर आओ तब तक मैं यहाँ तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।"

मगर के किनारे पर पहुँचते ही बन्दर उसकी पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और बोला — "अब तुमको बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ेगा। मेरा कलेजा तो मेरे शरीर के अन्दर है और वह वहीं रहेगा। मुझे अफसोस है कि मैं उसको बाहर निकाल कर तुम्हें नहीं दे सकता।"

मगर बेचारा अपने घर वापस लौट गया।

बाद में बन्दर उन नारंगी आमों के बारे में सोचता रहा कि वे आम कैसे होंगे। उसने कुछ भूरे पत्थर नदी में से निकले देखे तो उनके ऊपर से कूदता हुआ वह उस टापू पर चला गया।

आम बहुत रसीले थे। वह उनको तब तक खाता रहा जब तक कि उसका खूब पेट नहीं भर गया।

जब वह आम खा कर लौट रहा था तो उसने मगर को एक पत्थर पर लेटे हुए देखा। अब वह अपने घर कैसे वापस जाये क्योंकि उसको तो उस पत्थर के ऊपर से हो कर जाना था सो उसको एक तरकीब सूझी।

वह बोला — "हलो पत्थर।"

बन्दर ने पत्थर के जवाब का इन्तजार किया पर उसको कुछ सुनायी नहीं दिया।

बन्दर फिर बोला — "जब मैं तुमसे बात करता हूँ तो तुम मुझ से हलो कहते हो। आज क्या हुआ?"

मगर ने बन्दर की आवाज सुनी तो उसने सोचा — "अगर मैं उसका उसके सवाल का जवाब नहीं दूँगा तो उसको पता चल जायेगा कि मैं यहॉ हूँ और फिर वह मुझसे बच कर भाग जायेगा।

फिर मैं उसको अपनी पत्नी के लिये पकड़ नहीं पाऊँगा और मुझे तो उसको पकड़ना ही है इसलिये मुझे इसको जवाब तो देना ही चाहिये।"

सो उसने जवाब दिया — "हलो बन्दर।"

बन्दर बोला — "मगर तुम बिल्कुल भी होशियार नहीं हो। तुम्हें मालूम नहीं कि पत्थर बात नहीं किया करते।"

मगर बोला — "पर मैं कम से कम इतना होशियार हूॅ कि तुम को पकड़ सकूॅ। अब तुम मुझसे बच कर घर नहीं जा सकते।"

बन्दर बोला — "शायद तुम ठीक कहते हो। ठीक है मैं अपने आप ही तुम्हारे मुॅह में आ जाता हूॅ। तुम अपना मुॅह खोलो और मैं तुम्हारे मुॅह में कूद जाता हूॅ।"

यह सुन कर मगर ने अपना मुॅह खोल दिया। पर शायद तुम्हें पता होगा कि जब मगर अपना मुॅह खोलता है तो वह अपनी ऑखें बन्द कर लेता है।

बस जब मगर ने अपना मुॅह खोला तो अपनी ऑखें बन्द कर लीं और बन्दर उसकी नाक पर पैर रख कर नदी के उस पार पहुॅच गया।

जब तुम जंगल में होते हो तो तुम बन्दर की हॅसी और बातें अभी भी सुन सकते हो कि बहुत साल पहले उसने कैसे मगर को बेवकूफ बनाया।

इसके अलावा तुम मगरों को भी देख सकते हो कि वे किस तरह नदी के किनारे बन्दर का कलेजा खाने के लिये उसको पकड़ने की कोशिश में बैठे रहते हैं।

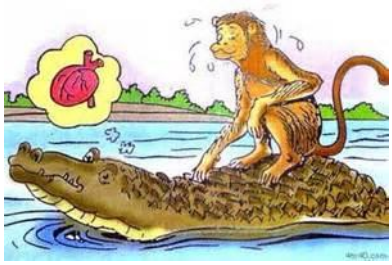

4 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी[8]

मगर और बन्दर जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के तन्ज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि कीमा बन्दर[9] और पापा शार्क बहुत गहरे दोस्त बन गये। बन्दर तो एक बहुत बड़े कूयू[10] के पेड़ पर रहता था जो समुद्र के किनार ही उगा हुआ था। उसकी कुछ शाखें जमीन की तरफ थीं और कुछ शाखें समुद्र के ऊपर थीं और पापा शार्क समुद्र में रहता था।

हर सुबह जब बन्दर कूयू पेड़ की गिरी का नाश्ता कर रहा होता तो पापा शार्क किनारे पर पेड़ के नीचे आता और आवाज लगाता — "मुझे थोड़ी सी गिरी दो न कीमा भाई।" और बन्दर उसके लिये कई सारी गिरी नीचे फेंक देता।

यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा कि एक दिन पापा शार्क ने बन्दर से कहा — "कीमा भाई, तुमने मेरे ऊपर बहुत

[8] The Monkey, the Shark and the Washerman's Donkey – a folktale from Zanzibar, Eastern Africa. [Surprisingly this story has been told and heard in several other countries too, India, Ethiopia etc.]
[9] Keema Monkey
[10] Mkooyoo tree

मेहरबानियॉ की हैं। मैं चाहता हूॅ कि एक दिन तुम मेरे घर चलो ताकि मैं तुम्हारी उन मेहरबानियों का कुछ बदला चुका सकूॅ।"

बन्दर बोला — "मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूॅ पापा शार्क। हम जमीन पर रहने वाले लोग हैं पानी में नहीं जा सकते।"

शार्क बोला — "तुम उसकी चिन्ता मत करो। मैं तुमको पानी में ले भी जाऊॅगा और एक बूॅद पानी भी तुमको नहीं छू पायेगा।"

बन्दर बोला — "तब ठीक है। चलो चलते हैं।"

सो पापा शार्क ने कीमा बन्दर को अपनी पीठ पर बिठाया और नदी में तैर गया। जब वे लोग बीच पानी में पहुॅच गये तो शार्क बोला — "तुम मेरे दोस्त हो इसलिये मैं तुमको सच सच बताता हूॅ।"

बन्दर यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या बात है पापा शार्क क्या बात है? वह क्या सच है जो तुम मुझे बताना चाहते हो?"

पापा शार्क बोला — "सच तो यह है बन्दर भाई कि हमारा राजा बहुत बीमार है और हमारे डाक्टर ने हमें बताया है कि उसकी दवा केवल बन्दर के कलेजे से ही बन सकती है।"

कीमा बन्दर एक पल सोच कर बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो। तुमने यह बात मुझे चलने से पहले क्यों नहीं बतायी?"

पापा शार्क ने पूछा — "पर वह क्यों?"

कीमा बन्दर थोड़ी देर तो चुप रहा उसने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह अपने बचाव का कोई तरीका सोच रहा था।

कीमा बन्दर को चुप देख कर पापा शार्क ने पूछा — "अरे तुम बोलते क्यों नहीं?"

कीमा बन्दर बोला — "अब मैं क्या बोलूॅ क्योंकि अब तो बहुत देर हो गयी पापा शार्क। अगर तुमने यह बात मुझे चलने से पहले बतायी होती तो मैं अपना कलेजा अपने साथ ले कर आता।"

पापा शार्क ने आश्चर्य से पूछा — "क्या मतलब? क्या तुम्हारा कलेजा तुम्हारे पास नहीं है?"

कीमा बन्दर बोला — "ओह तो तुम हमारे बारे में कुछ भी नहीं जानते क्या? हम बन्दर लोग जब बाहर जाते हैं तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आते हैं और बिना कलेजे के ही इधर उधर घूमते रहते हैं। तुमको मेरा विश्वास नहीं हो रहा? तुम समझ रहे हो कि मैं डर रहा हूॅ?

तो फिर चलो, हम तुम्हारे घर ही चलते हैं। वहॉ तुम मुझे मार सकते हो और मेरा कलेजा ढूॅढ सकते हो पर वह सब बेकार ही रहेगा क्योंकि वह तो वहॉ है ही नहीं तो वह तुमको मिलेगा कहॉ से।"

बन्दर शार्क का दोस्त था सो शार्क को बन्दर पर विश्वास हो गया। वह बोला — "अगर ऐसा है तो चलो फिर वापस तुम्हारे घर ही चलते है तुम्हारा कलेजा लाने।"

कीमा बोला — "नहीं नहीं, पहले अब हम तुम्हारे घर ही चलते हैं।"

लेकिन शार्क बोला — "नहीं नहीं, पहले तुम्हारे घर चलते हैं तुम्हारा कलेजा लाने के लिये।"

आखिर बन्दर ऊपर से अपने घर जाने के लिये अनमनापन दिखाते हुए अपने घर ही चलने को तैयार हो गया और शार्क बन्दर के घर की तरफ वापस लौट पड़ा।

शार्क के किनारे पहुॅचते ही बन्दर जमीन पर कूद गया और जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया। वहॉ से वह बोला — "शार्क पापा, मेरा इन्तजार करो। मैं ज़रा अपना कलेजा ले लूॅ फिर चलते हैं।"

जब वह पेड़ पर काफी ऊॅची टहनियों पर पहुॅच गया तो वहॉ जा कर वह चुपचाप शान्ति से बैठ गया। शार्क बेचारा काफी देर तक इन्तजार करता रहा फिर बोला — "कीमा भाई, आओ चलें।"

पर कीमा बन्दर चुपचाप वहीं बैठा रहा। शार्क ने फिर कीमा को आवाज लगायी पर इस बार बन्दर बोला "कहॉ?"

"मेरे घर।"

कीमा बन्दर चिल्लाया — "क्या तुम पागल हो?"

शार्क ने पूछा — "क्यों, मैं पागल क्यों हूँ?"

बन्दर बोला — "क्या तुमने मुझे धोबी की गधी समझ रखा है?"

शार्क ने पूछा — "धोबी की गधी में क्या खास बात है भाई?"

बन्दर बोला — "उसकी खासियत यह है कि न तो उसके कलेजा होता है और न ही उसके कान होते हैं।"

अब शार्क अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाया उसने बन्दर से उस धोबी की गधी की कहानी सुनाने के लिये कहा जिसके न तो कलेजा था और न कान थे। बन्दर ने शार्क को धोबी की गधी की कहानी कुछ ऐसे सुनायी —

धोबी की गधी की कहानी

एक धोबी के पास एक गधी थी। उसका नाम पूँडा[11] था। वह धोबी अपनी गधी को बहुत प्यार करता था पर किसी वजह से वह गधी घर से भाग गयी और जंगल चली गयी।

वहॉ जा कर कोई काम न होने की वजह से वह सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने लगी और सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने की वजह से वह बहुत मोटी भी हो गयी।

[11] Poonda the she donkey

एक दिन सूँगूरा[12] नाम का बड़ा खरगोश जंगल में घूमते घूमते पूँडा गधी के पास से गुजरा। अब बड़ा खरगोश तो बहुत ही चालाक जानवर होता है। अगर तुम ध्यान से देखो तो उसका मुँह हमेशा चलता ही रहता है। ऐसा लगता है जैसे वह हमेशा अपने आपसे हर तरीके की बातें करता रहता है।

सो जब सूँगूरा बड़े खरगोश ने पूँडा गधी को देखा तो सोचा "ओह यह गधी तो बहुत मोटी है। इसमें से तो हमको बहुत सारा मॉस मिलेगा।"

तो अब वह खुद तो गधी को मार नहीं सकता था सो वह तुरन्त ही सिम्बा शेर[13] के पास गया।

सिम्बा शेर काफी बीमार था और बेचारा अभी पूरी तरह से ठीक भी नहीं हो पाया था सो काफी कमजोर भी था। वह शिकार के लिये भी नहीं जा सकता था और वह भूखा भी बहुत था।

सूँगूरा बड़ा खरगोश उससे बोला — "मैं कल तुम्हारे लिये

काफी मॉस ला सकता हूँ जो हम दोनों के लिये काफी से भी ज़्यादा होगा पर तुमको उस शिकार को मारना पड़ेगा।"

[12] Soongooraa hare – in Eastern and Southern African countries hare's name is Soongooraa. Poondaa is the she-donkey. Hare is like a rabbit but is bigger than the rabbit. See its picture above.

[13] Simba lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

सिम्बा शेर बोला — "दोस्त यह तो बड़ी अच्छी बात है। ठीक है, तुम उसे ले कर आओ फिर मैं देखता हूँ।"

यह सुन कर सूँगूरा बड़ा खरगोश तुरन्त ही जंगल में भाग गया। वह गधी के पास पहुँचा और उससे बोला — "ओ मिस पूँडा, मुझे तुम्हारा हाथ माँगने के लिये तुम्हारे पास भेजा गया है।"

पूँडा गधी ने पूछा — "किसने भेजा है तुम्हें? किसने माँगा है मेरा हाथ?"

"सिम्बा शेर ने।"

यह सुन कर तो गधी बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "ओह यह तो बहुत ही अच्छा रिश्ता है चलो जल्दी चलें।"

सो दोनों शेर के घर आ पहुँचे। शेर ने उनको प्रेम से अन्दर बुलाया और बैठाया। सूँगूरा बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर को यह बताने के लिये अपनी भौंहों से इशारा किया कि यही है वह शिकार जिसकी मैं कल बात कर रहा था। मैं बाहर जाता हूँ और मैं वहीं इन्तजार करता हूँ।

फिर उसने पूँडा से कहा — "मिस पूँडा, मुझे थोड़ा काम है वह काम करके मैं अभी वापस आता हूँ। तब तक तुम अपने होने वाले पति के पास बैठ कर गपशप करो।" और यह कह कर वह बड़ा खरगोश वहाँ से बाहर भाग गया।

जैसे ही बड़ा खरगोश बाहर गया शेर गधी के ऊपर कूद पड़ा। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। गधी ने शेर को बहुत ज़ोर से

मारा। शेर उस समय बहुत कमजोर था। काफी कोशिशों के बाद भी शेर गधी को न मार सका और वह गधी शेर को नीचे पटक कर जंगल में अपने घर भाग गयी।

थोड़ी ही देर में बाहर से बड़ा खरगोश आ गया और शेर से पूछा — "सिम्बा शेर जी क्या हुआ? क्या तुमने उस गधी को मार दिया?"

शेर बोला — "नहीं, मैं उसको नहीं मार सका। बल्कि वह मुझे ठोकर मार कर चली गयी। हालॉकि मैं अभी ज़्यादा ताकतवर नहीं हूॅ फिर भी मैंने भी उसकी खूब धुनाई की।"

बड़ा खरगोश बोला — "कोई बात नहीं। इस बात के लिये तुम अपने आपको दोष मत दो। मैं फिर देखूॅगा।"

फिर खरगोश काफी दिनों तक इन्तजार करता रहा जब तक कि शेर और गधी दोनों ही ठीक नहीं हो गये।

एक दिन खरगोश ने फिर पूछा — "क्या कहते हो सिम्बा शेर? अब ले आऊॅ उस गधी को?"

शेर बोला — "हॉ अब ले आओ तुम उसको। अबकी बार मैं उसको फाड़ कर रख दूॅगा।"

सुन कर खरगोश फिर जंगल की तरफ चला गया।

गधी ने खरगोश को अपने घर में बुलाया और उससे जंगल की खबर पूछी। खरगोश बोला — "तुम्हारे प्रेमी ने तुमको फिर बुलाया है, चलो।"

पूँडा बोली — "उस दिन तुम मुझे उसके पास ले गये थे न। उसने मुझे बहुत खरोंचा। अब तो मुझे उसके पास जाते में भी डर लगता है।"

खरगोश बोला — "श श श। वह तो उसके तुमको सहलाने का एक ढंग था। वह तो तुमको बहुत प्यार करता है।"

गधी बोली — "अच्छा? तो चलो मैं फिर चल कर देखती हूँ।"

सो वे दोनों फिर शेर के पास चले। जैसे ही शेर ने उनको आते देखा तो वह गधी के ऊपर उछला और अब की बार उसने उस गधी के दो टुकड़े कर दिये।

फिर शेर ने खरगोश से कहा — "यह मॉस ले जाओ और इसे भून कर ले आओ। और देखो, मुझे तो केवल इसका कलेजा और कान चाहिये।"

खरगोश बोला "ठीक है" और गधी को ले कर चला गया।

उसने मॉस को एक ऐसी जगह ले जा कर भूना जहॉ शेर उसको देख नहीं सकता था।

उसने गधी का कलेजा और कान निकाल कर एक तरफ रख दिये। बचे हुए मॉस में से उसने पेट भर कर मॉस खाया और फिर

उसमें से भी जो बचा वह उठा कर रख दिया। इतने में ही शेर आ गया और उसने गधी का कलेजा और कान मॉगे।

खरगोश बोला — "कलेजा और कान? वे कहॉ हैं?"

शेर गुर्राया — "क्या मतलब?"

खरगोश हॅसा और बोला — "मैंने तुम्हें बताया तो था कि वह धोबी की गधी थी।"

शेर बोला — "तो इससे क्या होता है। क्या धोबी की गधी के कलेजा और कान नहीं होते?"

खरगोश अपने सिर पर हाथ मार कर बोला — "तुम इतने बड़े हो गये सिम्बा और तुमको अभी तक यह पता नहीं चला कि अगर इसके कलेजा और कान होते तो क्या यह दोबारा तुम्हारे पास आती?"

यह तो शेर ने कभी सोचा ही नहीं था। शेर को खरगोश पर विश्वास हो गया कि इस धोबी की गधी के कलेजा और कान तो थे ही नहीं।

सो कीमा बन्दर ने शार्क से कहा — "क्या तुम मुझे धोबी की गधी समझते हो? जाओ जाओ और अपने घर चले जाओ। अब तुम मुझे कभी नहीं पा सकते और हमारी तुम्हारी दोस्ती भी खत्म।"

एक कहानी कई रंग की सीरीज़ में

1 बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ
2 टाम थम्ब जैसी कहानियॉ
3 छह हंस जैसी कहानियॉ
4 तीन सन्तरे जैसी कहानियॉ
5 स्नो व्हाइट जैसी कहानियॉ
6 सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियॉ
7–1 सूअर राजा जैसी कहानियॉ–**1**
7–2 सूअर राजा जैसी कहानियॉ–**2**
8 जूते पहने बिल्ला जैसी कहानियॉ
9 हैन्सैल और ग्रेटैल जैसी कहानियॉ
10 रैड राइडिंग हुड जैसी कहानियॉ
11–1 सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में–**1**
11–2 सिन्डरैला जैसी कहानियॉ — यूरोप में–**2**
12 दुनियॉ में कितनी सिन्डरैला
13 रम्पिलटिल्टस्किन जैसी कहानियॉ
14 अली बाबा और चालीस चोर जैसी कहानियॉ
15 मगर और बन्दर जैसी कहानियॉ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2016**